International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 185-189

भारत – श्रीलंका संबंध

शैलेष कुमार*
डॉ. सीमा हटीला**

सार

ब्रिटिश उपनिवेश की गुलामी से मुक्त होने के पश्चात एशिया में अनेक छोटे–बड़े राष्ट्रों ने स्वायतता हासिल की उनमें से एक श्रीलंका भी है। पौराणिक दृष्टि से भारत श्रीलंका का चाहे संबंध रहा हो किन्तु राजनीतिक दृष्टि से 1947 के पश्चात दोनों देशों के परस्पर संबंधों में अनेक उतार–चढ़ाव देखने को मिलते हैं। चाहे वह तमिल समर्थक लिट्टे हो या उनका नेता प्रभाकरण जिसे लेकर भारत और श्रीलंका में अनेक बार तनाव की स्थिति देखी जा सकती है। प्रस्तुत शोध में वर्तमान श्रीलंका की विषम राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है तथा भारत श्रीलंका के ऐतिहासिक संबंधों के परिप्रेक्ष्य में उसे देखा गया है। ऐसे में भारत की विदेश नीति में हुए बदलावों को भी रेखांकित करना आवश्यक समझा गया है।

शब्दकोशः *भारत, श्रीलंका राजनीति, आर्थिक, समझौते, लिट्टे, आतंकवाद, विदेश नीति।*

प्रस्तावना

श्रीलंका–भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटा सा द्वीप है। श्रीलंका का दक्षिणी भाग पर्वतीय है एवं उत्तरी भाग एक विस्तृत व चौरस मैदान है। इसमें महावेली गंगायान और अरूबी नदियाँ बहती हैं। विष्वत् वृत्त के निकट स्थित होने के कारण श्रीलंका में वर्ष भर कड़ी गर्मी पड़ती है किन्तु इसके चारो ओर फैला हुआ समुद्र यहाँ की जलवायु को सामान्य बना देता है। श्रीलंका के दक्षिणी पश्चिमी तथा मध्य भाग में दक्षिणी पश्चिमी मानसून से ग्रीष्म ऋतु में भारी वर्षा होती है। श्रीलंका में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है किन्तु यहाँ देश की आवश्यकता पूर्ति के लिये पर्याप्त चावल नहीं पैदा होता। अतः विदेशों से आयात करना पड़ता है। श्रीलंका की जनसंख्या का औसत घनत्व लगभग 247 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। इसका क्षेत्रफल 25 हजार 232 वर्गमील है। सांस्कृतिक दृष्टि से श्रीलंका भारत से जुड़ा हुआ है। यहाँ मुख्य रूप से सिंधली व तमिल दो कौमे पाई जाती हैं। यहाँ के अधिकांश निवासी बौद्धधर्म के अनुयायी हैं।

हिन्द महासागर में भारत के समीप स्थित होने के कारण सैनिक व सामरिक दृष्टि से इसका भारत के लिये अत्यधिक महत्व है। भारत व श्रीलंका के सदियों पुराने सम्बन्ध रहे हैं। भारत व श्रीलंका की पौराणिक पुस्तकों में एक दूसरे की चर्चा पाई जाती है। भारत व श्रीलंका में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होते हुये भी समय–समय पर दोनों में विवाद उभरते रहे हैं और इनका समाधान भी होता रहा है।

* शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग), जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।
** सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान विभाग), महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

1947 के पूर्व दोनो ही देश ब्रिटिश उपनिवेश थे। अंग्रेज श्रीलंका में अपने व्यापार के लिये भारतीय तमिलों को एक बड़ी संख्या में ले गये थे। सिंधलियों को वहाँ का मूल निवासी कहा जा सकता है। लम्बे समय तक लाखों की संख्या में पहुँचने वाले तमिल भी यहाँ के मूल निवासी बन गये। आजादी के बाद एक ऐसा समय भी आया जब दोनो ही देश तमिलों को अपनी नागरिकता देने से इन्कार करते रहे। अतः श्रीलंका के तमिलों को अपना अस्तित्व बचाने के लिये भयानक संघर्ष करना पड़ा। अन्त में तमिल लोग प्रभाकरन के नेतृत्व में संगठित होकर छापामार युद्ध करने लगे। आम तौर पर तमिल उग्रवादी संगठन लिट्टे को विश्व का सबसे शक्तिशाली आतंकी संगठन माना जाता है किन्तु लिट्टे आतंकवादी दृष्टि से वैसा संगठन नहीं है जो आमतौर पर पेशेवर आतंकवादी संगठन होते हैं। क्यों कि लिट्टे के नेतृत्व में लाखों तमिल अपने देश और अपनी पहचान बनाने के लिये सशत्र संघर्ष करते रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता के पूर्व 1939 से ही दोनो राष्ट्रों के बीच राज्यविहीन नागरिकों से सम्बन्धित जो विवाद था वह आज तक चल रहा है। 1955 के बाण्डुंग सम्मेलन मे दोनो राष्ट्रों ने एक दूसरे का साथ दिया। 1982 में भारत–चीन युद्ध के समय श्रीलंका की भूमिका से भारत को गहरा आघात लगा था। यद्यपि श्रीलंका की प्रधानमन्त्री श्रीमती श्रीमाओ भण्डारनायके ने गुट निरपेक्ष राष्ट्रों का सम्मेलन कोलम्बो में बुलाया। इस सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्तावों के आधार पर उन्होंने नईदिल्ली व पेकिंग की यात्रा की किन्तु कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकला। अक्टूबर 1962 में ष्लाल बहादुर शास्त्री व भण्डारनायके समझौते के द्वारा राज्यविहीन भारतीयों की समस्या को हल कर लिया गया। सभी राज्यविहीननागरिकों को भारत या श्रीलंका की नागरिकता प्राप्त करने के लिये आवेदन देने के लिये कहा गया। 1965 में दोनो राष्ट्र अधिक निकट आगे जब श्रीलंका के प्रधानमन्त्री डडले व सेनानायक ने भारत के न्यायोचित पक्ष का समर्थन किया एवं चीन द्वारा भारत पर आक्रमण करने तथा कोलम्बो प्रस्ताव को न मानने के लिये उसकी आलोचना की 1970 में पुनः नेतृत्व श्रीमती भण्डारनायके के हाथ में आया। 1971 में उनकी सरकार को उग्रवादी वामपंथियों के व्यापक विद्रोह का सामना करना पड़ा जिसे दबाने के लिये भारत ने शस्त्रों की सहायता की। श्रीमती गाँधी ने अप्रैल 1972 में श्रीलंका की यात्रा की. जनवरी 1973 में श्रीमती भण्डारनायके भारत आई। भारत व श्रीलंका के समुद्री तटों के बीच लगभग 200 एकड़ के कच्चातिबू नामक छोटे से द्वीप पर आधिपत्य सम्बन्धी विवाद 28 जून 1974 के समझौते द्वारा निपटा लिया गया। अप्रैल 1976 में दोनो राष्ट्रों के बीच समुद्री सीमा सम्बन्धी समझौता हुआ। दोनो राष्ट्रों ने स्वीकार किया कि प्रत्येक राष्ट्र के तट का 200 मील का समुद्री क्षेत्र उसका आर्थिक क्षेत्र होगा और जहाँ दोनों राष्ट्रों के बीच की दूरी 200 मील से कम होगी वहाँ दूसरे राष्ट्र की मध्यस्थ रेखा सीमा रेखा होगी। अगस्त 1976 में भारत के प्रधानमन्त्री व विदेश मन्त्री ने कोलम्बो की यात्रा की। मार्च 1977 में श्रीमती भण्डारनायके की पराजय के बाद जयवर्द्धन श्रीलंका के प्रधानमन्त्री बने। 1977 में ही एक सांस्कृतिक करार पर हस्ताक्षर हुये और भारत में सामूहिक उपयोग की अनिवार्य वस्तुओं तथा मध्यवती साज–सामान की खरीद के लिये श्रीलंका को सात करोड़ रूपए का ऋण दिया। श्रीलंका के जे. आर. जयवर्द्धन ने प्रथमः राष्ट्रपति बनने के अवसर पर 3 से 5 जनवरी 1978 तक भारत केगृहमन्त्री चौधरी चरण सिंह ने श्रीलंका की यात्रा की। अक्टूबर 1978 में राष्ट्रपति जयवर्द्धन की यात्रा व फरवरी 1979 में मोरारजी देसाई की श्रीलंका यात्रा से दोनो राष्ट्रों के सम्बन्धों में सौहार्दपूर्ण मैत्री कायम हुई। जनवरी 1980 में श्रीमती गाँधी के पुनः सत्तारूढ़ होने के बाद दोनो राष्ट्रों की मैत्री और आगे बढ़ी।

1980–81 की अवधि में दोनो राष्ट्रों के सम्बन्ध मधुर बने रहे। 1980 में राष्ट्रपति जयवर्द्धन ने विदेशमन्त्री के साथ भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान राष्ट्रपति जयवर्द्धन ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के साथ विचार–विमर्श किया। जनवरी 1981 में एक करार पर हस्ताक्षर हुये जिसके अन्तर्गत भारत ने श्रीलंका को 10रू करोड़ रुपए का एक और ऋण दिया। 1982 में भारतीय राष्ट्रपति नीलम संजीवरेड्डी की श्रीलंका की यात्रा भारत व लंका के बीच मित्रता व सहयोग की एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुई। अक्टूबर 1982 में जयवर्द्धने पुनः श्रीलंका के राष्ट्रपति चुने गये। 1983 में श्रीलंका में भारतीय मूल के राज्य–विहीन व्यक्तियों की समस्या प्रत्यावर्तन समझौते के द्वारा काफी हद तक सुलझाई जा सकी थी। राज्य–विहीन शेष व्यक्तियों की समस्या के बारे में एक दूसरे के निकट सम्पर्क बने हुये थे। दोनो राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्ध मधुर थे किन्तु

श्रीलंका में भारतीय मूल के निवासियों की समस्या ने अचानक ही तूल पकड़ लिया और सैकड़ों मासूम तमिलों की हत्या कर दी गई और 50 हजार से अधिक लोग शरणार्थी बन गये। हजारो मकानों व दूकानों को लूट लिया गया। स्वाभाविक ही था कि भारतीय मूल के निवासियों के संकट पर भारत अपनी चिंता व्यक्त करता। उक्त घटनायें सामान्य दर्जे की नहीं थीं। भारतीय राजनयिकऔर कर्मचारियों के घरों तक पर हमला किया गयाओं का तौर व जोर बढ़ता गया। सिंधली राष्ट्रपति जमने ने कि यदि संयोगवश भारत आक्रमण करता है सम्भव है हम पराजित हो जायें पर लड़ेंगे शान से।[६] इस वक्तव्य से भारत में आक्रोश फैल गया किन्तु भारत सरकार ने अत्यन्त संयम, धैर्य व लिया। श्रीलंका के जातीय दंगों में निर्दोष तमिलों के खून से होली खेली जाती रही फिर भी भारत सरकार ने सख्त कदम नहीं उठाए जिससे किसी प्रकार का सन्देह पैदा होता। अगस्त 1983 में राष्ट्रपति जयवर्द्धने के भाई एच.डब्ल्यू. जयवर्धने ने भारत में श्रीमती इन्दिरा गाँधी से बातें की। वार्ता के कई दौरों के बाद भी समस्या का कोई हल नहीं निकल सका। तमिलों की हत्या जारी रही। तमिल यूनाइटेड लिबरेशन फटने राष्ट्रपति जयवर्द्धने द्वारा प्रस्तावित – 1984 के सर्वदलीय सम्मेलन में हिस्सा लेना स्वीकार किया परंतु सम्मेलन बिना किसी ठोस नतीजे के 21 दिसम्बर 1954 को समाप्त हो गया।

दक्षिण एशिया में हिन्द महासागर के उत्तरी भाग में स्थित दुनिया के सबसे खूबसूरत देशों में एक श्रीलंका इन दिनों गहरे संकट में है. दो करोड़ 20 लाख की आबादी वाला यह देश सबसे खराब आर्थिक और राजनीतिक दौर से गुजर रहा है. कर्ज में डूबे इस देश के हालात इतने खराब हो गए हैं कि नाराज लोग सड़कों पर उतर आए हैं और देश की सरकार बदलने की लगातार मांग कर रहे हैं.

खराब हालात में श्रीलंका की मदद के लिए भारत आगे आया है. भारत श्रीलंका के साथ हमेशा श्पड़ोसी धर्मश निभाता रहा है. दोनों देशों के बीच के रिश्ते आज से नहीं बल्कि कई सौ साल पुराने हैं. आइए दोनों देशों के बीच रिश्ते कितने पुराने हैं इसको पहले जान लेते हैं...

पौराणिक कथाओं में है जिक्र

श्रीलंका और भारत दो अलग–अलग देश होते हुए भी पौराणिक कथाओं के आधार पर जुड़े हुए हैं। कई प्रचलित कथाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक आधार पर रिश्ते सदियों पुराने हैं। श्रीलंका में रह रहे हिन्दुओं की आबादी देश की कुल आबादी का लगभग 12.60 प्रतिशत है। एक रिसर्च की मानें तो श्रीलंका की प्रमुख जाति सिंघल है और इस सिंघल जाति का संबंध उत्तर भारत के लोगों से है। सिंघल भाषा गुजराती और सिंधी भाषा जैसी ही है। भारत के धनुषकोडी से श्रीलंका की दूरी महज 18 मील है।

श्रीलंका के इतिहास पर नजर डालें तो इस देश का लगभग 3000 वर्षों का लिखित इतिहास मौजूद है। आइए अब उन कथाओं को जान लेते हैं जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत और श्रीलंका का संबंध सदियों पुराना है।

भारत–श्रीलंका वाणिज्यिक संबंध

दोनों देशों के बीच वाणिज्यिक संबंध भी काफी गहरे और पुराने हैं। भारत श्रीलंका का सबसे करीबी पड़ोसी है और दोनों देश एक समुद्री सीमा साझा करते हैं। दोनों देशों ने 28 दिसंबर 1998 को भारत – श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता (आईएसएफटीए) पर हस्ताक्षर किया था। यह श्रीलंका का पहला द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता था. द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद साल 2000 से भारत श्रीलंका व्यापार बढ़ने लगा। साल 2004 तक भारत–श्रीलंकाई व्यापार 128 प्रतिशत बढ़ गया और साल 2006 तक यह चौगुना होकर यूएस + 2.6 बिलियन तक पहुंच गया। वहीं साल 2010 दोनों देशों के द्विपक्षीय व्यापार के लिए सबसे अच्छा साल माना जाता है. दरअसल 2010 के पहले सात महीनों में भारत के श्रीलंका के निर्यात में 45ः की वृद्धि हुई थी। भारत श्रीलंका में विकास गतिविधियों के कई क्षेत्रों में भी सक्रिय है। भारत द्वारा दिए गए कुल विकास ऋण का लगभग छठा हिस्सा श्रीलंका को उपलब्ध कराया जाता है।

2.2 करोड़ आबादी वाला देश श्रीलंका, इस वक्त एक अभूतपूर्व और ऐसे आर्थिक संकट का सामना कर रहा है, जिसके 2009 में गृह युद्ध के ख़ात्मे के बाद हासिल हुई उसकी तरक़्क़ी को भी मिट्टी में मिला देने का खतरा है। आसमान छूती महंगाई (जो मार्च 2022 में 21 फीसद से ज्यादा थी), दस– दस घंटे से भी ज्यादा की बिजली कटौती, और जरूरी चीजों– जैसे कि खाने पीने के सामान, ईंधन और जीवन रक्षक दवाओं की भारी कमी के चलते ऐसा लग रहा है कि ये संकट नए–नए दायरों में फैलता जा रहा है। इस आर्थिक संकट के अलावा आज श्रीलंका एक राजनीतिक संकट का भी शिकार है, जिसके चलते अब तक महिंदा राजपक्षे को सरकार विरोधी और समर्थक प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़प के चलते इस्तीफा देना पड़ा और एक कार्यवाहक प्रधानमंत्री को सरकार की बागडोर सैंपनी पड़ी है। इसके अलावा, श्रीलंका में दो बार इमरजेंसी लगाई जा चुकी है (जिसमें सेना को देखते ही गोली मार देने के आदेश भी दिए गए थे) और सोशल मीडिया पर नाटकीय पाबंदियां लगाई जा चुकी हैं। ऐसे में सवाल ये पैदा होता है कि, ऐसे कौन से कारण हैं, जो हालात यहां तक पहुंच गए?

वैसे तो बहुत से अर्थशास्त्री और नीति निर्माता श्रीलंका के इस आर्थिक और राजनीतिक संकट के लिए महामारी को सबसे बड़ी वजह मानते हैं– जिसके चलते श्रीलंका की आमदनी के सबसे बड़े स्रोत यानी पर्यटन उद्योग से कमाई बेहद कम (2018 में 4 अरब डॉलर से घटकर 2021 में 15 करोड़ डॉलर) ही रह गई और इससे श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार भी ख़ाली हो गया। हालांकि, इस संकट की नींव तो बहुत पहले से रखी जा रही थी. साल 2009 से 2018 के दौरान श्रीलंका का व्यापार घाटा पांच अरब डॉलर से बढ़कर 12 अरब डॉलर तक पहुंच गया। हाल के वर्षों में कई नीतिगत कदमों की वजह से श्रीलंका की अर्थव्यवस्था को कई और झटकों का भी सामना करना पड़ा है। जैसे कि– टैक्स में भारी कटौती, ब्याज दरों में कमी और फर्टिलाइजर व कीटनाशक के आयात पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाकर एक झटके में ऑर्गेनिक खेती के तबाही लाने वाले फैसले, जो राजपक्षे सरकार ने लिएय अभी हाल ही में श्रीलंका पर आयात का बोझ और बढ़ गया जब यूक्रेन संकट के चलते महंगाई में उछाल आ गया। इन सबके बीच जो एक घटना जिसने हालिया संकट को जन्म दिया, वो थी क़र्ज के अंतरराष्ट्रीय बाजार से श्रीलंका का मोटे तौर पर बाहर हो जाना। इसकी वजह, महामारी के फौरन बाद, देश की क्रेडिट रेटिंग में नाटकीय ढंग से गिरावट का आना थी। इस वजह से श्रीलंका के लिए, अपने बरसों से इकट्ठा हो रहे विदेश मुद्रा पर आधारित क़र्ज को चुका पाना क़रीब– क़रीब नामुमकिन हो गया और श्रीलंका के सामने आज का संकट आ खड़ा हुआ।

ऐसे तीन प्राथमिक कारण हैं, जिससे श्रीलंका का संकट भारत को भी प्रभावित करता हैरू चीन, व्यापार और राजनीतिक अस्थिरता की आशंका।

वैसे तो भारत की नेबरहुड फर्स्ट वाली विदेश नीति में श्रीलंका का बहुत अहम स्थान है। लेकिन, ऐसा लगता है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत और श्रीलंका के बीच नजदीकी व्यापारिक और विकास संबंधी रिश्ते मजबूत करने की अनदेखी की गई है. इससे श्रीलंका में चीन को एक प्रभावी विदेशी ताकत के तौर पर पांव जमाने का मौका मिल गया है. ये बात तब और साफ हो जाती है जब हम देखते हैं कि साल 2015 के बाद से श्रीलंका में होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत चीन बन गया है। व्यापार के मामलों में भी श्रीलंका, भारत की तुलना में चीन से कहीं ज्यादा आयात करता है।

श्रीलंका में चीन के निवेश की अक्सर राजनीतिक रिश्वतखोरी कहकर आलोचना की जाती है. इनमें पारदर्शिता, मूल्यांकन और समीक्षा की गुंजाइश नहीं होती।

चीन को लेकर भारत की चिंताएं, श्रीलंका में उसके निवेश के तौर तरीकों और संकट के समय उनके असर को लेकर हैं। श्रीलंका में चीन के निवेश की अक्सर राजनीतिक रिश्वतखोरी कहकर आलोचना की जाती है। इनमें पारदर्शिता, मूल्यांकन और समीक्षा की गुंजाइश नहीं होती। ऐसे में श्रीलंका में चीन के निवेश बार–बार उस स्तर का रोजगार या आमदनी पैदा करने में नाकाम रहे हैं, जिससे चीन द्वारा दिए गए क़र्ज को वाजिब

ठहराया जा सके। कई बार तो श्रीलंका की सरकार कर्ज चुकाने में नाकाम रही और उसने इसके बदले में सामरिक रूप से अहम शहरों और बंदरगाहों को चीन के हवाले करने दिया। इसकी सबसे बड़ी मिसाल हंबनटोटा बंदरगाह है। कई मामलों में तो श्रीलंका ने निवेश के बदले में चीन को पट्टे पर अपनी जमीनें ही दे दी हैं– मिसाल के तौर पर कोलंबो के पोर्ट सिटी प्रोजेक्ट में चीन ने 1.4 अरब डॉलर के निवेश के बदले में 100 हेक्टेयर जमीन हासिल की है। ऐसे तौर तरीकों से चीन ने श्रीलंका में काफी तादाद में जमीनें हासिल कर ली हैं। आज जब श्रीलंका का आर्थिक संकट और गहराता जा रहा है, तो डर इस बात का है कि वो सामरिक रूप से अहम बंदरगाह शहरों की अपनी और भी जमीन से हाथ धो बैठेगा। चूंकि श्रीलंका के ये बंदरगाह दक्षिण एशिया के कई अहम समुद्री मार्गों के बेहद करीब हैं, इसलिए इस इलाके में चीन की मौजूदगी बढ़ने की भारत की आशंकाएं सही साबित होंगी। भारत की चिंता इसलिए और भी बढ़ गई है, क्योंकि वो श्रीलंका को अपने 'प्रभाव क्षेत्र' का अभिन्न हिस्सा मानता है।

ऐसे में भारत ने अपनी विदेश नीति में एक प्रकार से श्रीलंका के प्रति तटस्थ भाव को अपना लिया है। वर्तमान भारत सरकार केवल देखो और करो की नीति अपना रही है। श्रीलंका के आर्थिक और राजनीतिक उलटफेर में किसी प्रकार के उत्साहजनक हस्तक्षेप से वर्तमान भारत सरकार अपने आप को अलग किये हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बोहरा, ए.एम. – इंडियन पीस कीपिंग इन लंका, ईयर बुक्स, नई दिल्ली, 1990
2. यादव, आर.एस. – भारत की विदेश नीति एक विश्लेषण, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
3. भारत सरकार विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट
4. दीक्षित, जे.एन. – भारत की विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
5. दत्त, वी.पी. – बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली, 2009
6. इंडिया टुडे
7. नवभारत टाइम्स
8. द हिन्दू
9. राजस्थान पत्रिका
10. दैनिक भास्कर

❖◆❖